अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

वर्तमान सामाजिक चुनौतियॉ और गीता का कर्मयोगः समाधान की ओर एक दृष्टि

डॉ.मीना पाण्डेय (सहायक प्राध्यापक),
शिक्षा विभाग,सांदीपनी एकेडमी, दुर्ग (छ.ग)
Email-meenapandey0106@gmail.com

सार–संक्षेप

आज के युग में हम पाते हैं कि अधिकांश व्यक्ति केवल स्वार्थ सिद्धि के लिए कर्म करते हैं उचित़–अनुचित कर्म में भी भेद नहीं कर पाते यही कारण है कि उसने प्रकृति का दोहन कुछ इस प्रकार किया है कि आज उसे स्वयं ग्लोबल वार्मिंग, बाढ़, भूकंप इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार अपने निकृष्ट स्वार्थ की पूर्ति के लिए विश्व में घृणित अपराध किया जा रहे हैं चारों ओर आतंक, अशांति, पापाचार एवं भय फैला हुआ है तकनीकी प्रगति का दुरुपयोग होने कारण इससे जुड़े हुए कई अपराध निरन्तर बढते जा रहे हैं। फलस्वरुप विश्व में सुख, शांति यहां तक की उसका अस्तित्व भी खतरे में है। भौतिक साघनों की सम्पन्नता ने व्यक्ति को श्रम से दूर कर दिया है। इससे कर्म की महत्ता का भी ह्रास हुआ है। फल के असक्ति से किये गये कर्मो ने समस्त विश्व में अशान्ति, अराजकता व अपराधिक मानसिकता का पोषण किया है।

अतः जब तक मनुष्य अपने स्वार्थ पूर्ण कर्मों से ऊपर नहीं उठेगा एवं गीता के निष्काम कर्म की अवधारणा को अपने जीवन में नहीं अपनाएगा तब तक हमारा यह विश्व हमारे रहने योग्य नहीं रहेगा। वर्तमान में विश्व में सुख, शांति स्थापित करने के लिए गीता के निष्काम कर्म की प्रासंगिकता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : कर्मयोग, कर्मवाद, सामाजिक प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

वर्तमान समय के मानव के मन में अकर्मयता बीज रूप में रोपित हो चुकी है, परि.णामतः समाज में नित्य नवीन कुरीतियाँ व्याप्त हो रही है। तथा संसार के अधिकांश मनुष्यों की जीवन शैली में अशान्ति, अव्यवस्था, व असंतोष व्याप्त हो गया है। व्यक्तिगत स्वार्थ व प्रतिस्पर्धा के परि.णामस्वरूप वह नियत कार्य को भली–भॉति करने में असमर्थ हो गया है। कर्म भीरू मानव कर्मयोग का आश्रय लेकर स्वयं का और समस्त विश्व का पोषण कर सकते है। शास्त्र सम्मतकर्म ही मनुष्य मात्र व आधुनिक समय के लिए सर्वथा उपयुक्त है। भारतीय धर्म ग्रंथो में मनुष्य योनि की प्राप्ति को भाग्य का विषय माना है तथा इसे ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

कृति की संज्ञा दी गई है। तुलसीदास कृत रामचरित मानस में इस योनि की प्रशंसा करते हुये, कहा गया है कि–

बडे भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद्रग्रंथन गावा।
साधना धाम मोह करि द्रवारा पारोना जेहि परलोक संवारा।।1

उपर्युक्त चौपाइयों में मानव देह का महिमा मंडन करते हुये इसे मोक्ष का साधन बताया गया है। जिस मानव देह की प्राप्ति हेतु देवता भी सदैव लालायित रहते है, उस देह को प्राप्त करने वाला मानव, आज उस देह एवं जीवन को नष्ट–भ्रष्ट कर रहा है। ऐसी स्थिति में मनुष्य के लिए अनिवार्य हो जाता है कि वह सद्रग्रंथों व सद्रगुरुओं का आश्रय कर जन्म–मरण के इस बंधन से मुक्ति प्राप्ति हेतु कर्म के चक्र को समझे कि – कर्म क्या है ? उसकी अवधारणा फल इत्यादि क्या है ? इन प्रश्नों के उत्तर हमें प्राचीन साहित्यों में प्राप्त होते है। इन सद्रग्रंथों द्रवारा मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करना सहज हो जाता है।
आज मनुष्य सबसे ज्यादा कर्मशील है और श्री कृष्ण की गीता जो कर्मयोग के माध्यम से कर्म के रहस्य को समझाती है। वर्तमान जीवन में मनुष्य के लिए सबसे ज्यादा कारगर सिद्ध हो सकती है। ये हजारों साल पुराना महान ग्रन्थ हमें आज के आधुनिक जीवन में जीने के लिए नया दृष्टिकोण दे सकता है।

मानव जाति का कल्याण एंव सद्गति उसके कर्मो में निहित है, उसकी निष्काम भावना से किये गये कर्म ही उसकी विजय का मार्ग प्रशस्त करेगी।
लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने गीता का महत्व को बताया है कि "गीता एक महान और गम्भीर ग्रन्थ है। निष्काम कर्मयोग इसका दर्शन ज्ञान, भक्ति और कर्म में समन्वय प्रदान करती है।" स्वामी विवेकानन्द ने अपनी प्रसिद्व पुस्तक 'कर्मयोग' में कहते हैं कि मनूष्य जीवन के लिए गीता से अधिक जागरूक प्रहरी शायद ही कोई और हो।"
आधुनिक युग तकनीकी का युग है। अत कुछ लोगों को यह शकां हो सकती है कि क्या आधुनिक युग में भी गीता की उपादयेता है ? सच देखा जाय तो गीता की यथार्थ उपयोगिता आधुनिक युग में ही है गीता का आधार मानव स्वभाव के मौलिक तत्वों पर है। अत मानव को सदा गीता से प्रेरणा मिलती रहेगी। अनेक दार्शनिक, राजनीतिज्ञ और वैज्ञानिकों नें गीता से प्रेरणा पायी है। असंख्य अन्य लोगों के अनुभव की भांति ही गाँधी जी का अनुभव था

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

की सकंट और निराशा के समय गीता से ही उन्हें समुचित समाधान मिला है यंग इण्डिया में गाँधी जी लिखते हैं– "जब निराशा मेरे सामने आ खड़ी होती है और मझु आशा की एक भी किरण नहीं दिखाई देती, तो मैं भगवद्गीता के पास लौटकर जाता हूँ । मझु कोई श्लोक यहॉ–वहॉ दिख जाता है, तो मैं तुरन्त घोर संकटों के बीच भी मस्कराने लगता हूँ।" 18

कर्मवाद का सिद्धांत भारतीय दर्शन के अनुसार

कर्मवाद का सिद्धांत भारतीय दर्शन का आधारभूत सिद्धांत है कर्म सिद्धांत का अर्थ है जैसा हम बोते हैं वैसा हम काटते हैं इस नियम के अनुसार शुभ कर्मों का फल शुभ और अशुभ कर्मों का फल अशुभ होता है इसके अनुसार 'कृतप्रणाश' अर्थात किए हुए कर्मों का फल नष्ट नहीं होता तथा 'अकृताभ्युपगम' अर्थात बिना किए कर्मों का फल भी नहीं प्राप्त होता है। कर्म सिद्धांत में आस्था रखने वाली दार्शनिकों ने माना है कि हमारा वर्तमान जीवन अतीत जीवन की कर्मों का फल है तथा भविष्य जीवन वर्तमान जीवन की कर्मों का फल होगा इस दृष्टि से कर्म तीन प्रकार के माने गए हैं–

- संचित कर्म
- प्रारब्ध
- संचीयमान कर्म

संचित कर्म

संचित कर उस कर्म को कहते हैं जो अतीत कर्मों से उत्पन्न होता है परंतु उसका फल मिलना भी शुरू नहीं हुआ है। इस कर्म का संबंध अतीत जीवन से है।

प्रारब्ध कर्म

वह है जिसका फल मिलना अभी शुरू हो गया है।इसका संबंध अतीत जीवन से है।

संचीयमान कर्म

वर्तमान जीवन की कर्मों को जिनका फल भविष्य में मिलेगा, जिसे संचीयमान कर्म कहते हैं। कर्म की यह तीनों रूप शक्ति संचालन की तीन विधाएं हैं। इन विधाओं से ही भाग्य का निर्माण होता है । भूत, वर्तमान और भविष्य का निर्माण इन्हीं विधाओं की अधीन हो यही कर्मवाद है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

गीता के कर्मयोग का रहस्य

कर्म योग वह है जिसमें कर्म की प्रधानता होती है। सकाम और निष्काम के भेद से कर्म दो प्रकार के होते हैं– सकाम कर्म तथा निष्काम कर्म। सकाम कर्म, बन्धन के हेतु होते हैं तो निष्काम कर्म, मोक्ष के हेतु होते हैं। गीता का मुख्य प्रतिपाद्य विषय निष्काम कर्म है। यह वह कर्म है जिसमें कामनाओं का सर्वथा अभाव रहता है। निष्काम कर्म संसार की भलाई के लिए किये जाते हैं। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा निष्काम कर्म का उपदेश कर्म से पलायित अर्जुन को कर्मरत् करने के लिए उस समय दिया गया है। जब कुरूक्षेत्र में सगे सम्बन्धियों को देखकर अर्जुन मोह ग्रस्त हो जाते हैं और किंकर्तव्यविमूढ़ की अवस्था को प्राप्त हो जाते है। इस प्रकार अर्जुन युद्ध नहीं करने का निश्चय करते है। ऐसे समय में गीता का उपदेश भगवान श्री "ष्ण के द्वारा दिया गया है। कर्मयोगी कर्म फल के प्रति अनासक्त होता है क्योंकि आसक्त कर्म जीव को बन्धन में डालते हैं जिससे मनुष्य विभिन्न योनियों में भटकता हुआ अधोगति को प्राप्त होता है निष्काम कर्म योगी अनासक्त भाव के कारण सुख, दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय सबमें समभाव रहता है यथा–

सुखदुःखे समे "त्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।38,

अर्थात् भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को जय–पराजय, लाभ–हानि आदि से ऊपर उठकर क्षत्रिय धर्म रूपी स्वकर्तव्य पालन का उपदेश देते है। आसक्ति के कारण ही अर्जुन के मन में भयारूढ़ वैराग्य उत्पन्न हुआ। ऐसा वैराग्य स्वभाविक न होकर बन्धन का हेतु बन रहा था। इसीलिये भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को निष्काम कर्म करने का उपदेश दिया है।

निष्काम कर्मों का कोई शुभा–शुभ फल नहीं होता है। अतः व्यक्ति निष्काम कर्मों के माध्यम से जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़कर सदा–सदा के लिये स्वंय को परम पिता–परमेश्वर में विलीन कर लेता है। इस प्रकार समस्त संसार की भलाई के लिए किया गया यह निष्काम कर्म ही 'कर्मयोग' है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

गीता के द्वितीय अध्याय के 47 वें श्लोक में निष्काम कर्म की व्याख्या करते हुये भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुभूर्मा ते सेडगोडस्त्वकर्माणि। 47

अर्थात् तुझे केवल कर्म करने का अधिकार है, केवल कर्म करना तेरे हाथ में है, कर्मो के फल पर तेरा अधिकार नहीं है। अतः तू कर्म फल की इच्छा न रखकर कर्म कर।

यहा निष्काम कर्म के बन्धन में एक स्वाभाविक प्रश्न मन में उठता है कि मूर्ख व्यक्ति भी किसी प्रयोजन के बिना कार्य में प्रवृत्त नहीं होते है– प्रयोजनमनूदिष्य मन्दोंऽपि न प्रवर्तते' इस न्याय के अनुसार निष्काम कर्म तो असम्भव है। क्योंकि यदि कोई कामना ही नही ं होगी तो हम कर्म क्यों करे? क्योंकि कर्तापन और आसक्ति, निष्काम कर्म के दो अंग बताये गये है इन दोनों का अभाव असम्भव है। कर्म न करना भी कर्म ही है परन्तु मनुष्य को चाहिए कि वो निष्काम भाव से मानव की भलाई हेतू कर्म करे, क्योकि निष्काम कर्म भी असम्भव है। इस समस्या का समाधान करते हुये स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

प्र"तेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहङ्कारविमूढ़ात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।27

अर्थात् कर्तापन का अभाव तभी सम्भव है, जब व्यक्ति यह भलि–भाँति समझ ले कि इसका कर्ता मैं नहीं हूँ कर्म तो प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं। अतः जो ज्ञानी व्यक्ति है वह यह जानता है कि सभी कर्म प्रकृति जनित गुणों द्वारा ही किये जाते हैं अर्थात् समस्त मनुष्य प्रकृति जनित गुणों द्वारा परवश होकर कर्म करने के लिये बाध्य होते हैं–

गीता में भी निष्काम का अर्थ लक्ष्यविहीनता न होकर कर्म फल के प्रति आसक्ति से दूर होने में है। गीता अपने सामाजिक और आध्यात्मिक दोनो ंअर्थो में लक्ष्य विहीन न होकर निष्काम कर्म योग का अनुपालन करती है। इसलिये भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को अपने दायित्व निर्वाह करने का तथा सामाजिक दायित्व के रूप में स्वधर्म पालन करने का तथा निष्काम कर्म योगी बनने का उपदेश देते हैं।

न ही कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत ।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।। 5

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति से अर्जित गुणों के अनुसार विवश होकर कर्म करना पड़ता है। मनुष्य अपना गुण धर्म (रज ,तम और सत) के अनुसार फल पाता है और काम करता है। ये प्रकृति गुण उसमें परिवर्तनशील भी होते हैं जब मनुष्य का मन प्राकृतिक गुणों के कारण विचलित होता है तो वो अपने काम को सम्पूर्णता से नहीं कर पाता और इसका मुख्य कारण है –हम लोग कार्य करते हुए उसके लाभ हानि के विषय में सोचते हुये सिर्फ फायदे के लिए कार्य करते है। इन सब से मनुष्य अहंकार और प्रतिस्पर्धा की भावना से युक्त होकर कार्य करता है , जिसकी वजह से मनुष्य हमेशा चिंतित एवं भययुक्त रहता है। मानव कार्य को बिना उसमें आसक्त हुए लाभ हानि के विचार से दूर हो कर करता है तो उसके परिणाम भी अच्छे होंगे और एक आत्मसंतुष्टि मिलेगी, क्योंकि आपने अपने कार्य को पूजा बना लिया और आप अध्यात्म से जुड़ गए।

कोई भी क्षण ऐसा नहीं है जहाँ मनुष्य बिना कर्म किए रहे। यह मनुष्य के जीवन का ही प्रश्न नहीं है, अपितु आत्मा का यह स्वभाव है कि वह सदैव सक्रिय रहता है और एक क्षण के लिए भी नही रूक सकता।

काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः। सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।।2

इस प्रकार निष्काम कर्म अकर्मण्यता की शिक्षा नहीं देता है अपितु कर्म फल के त्याग की शिक्षा देता है, तथा सिद्धि असिद्धि समस्त स्थितियों में कर्तापन के अभिमान से रहित समत्व बुद्धि को उत्पन्न करता है–

योगस्थः कुरू कर्माणि संङ्गत्यक्त्वा धनञ्जय। सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्व ंयोग उच्यते।।48

इस प्रकार कह सकते है कि निष्काम कर्म ईश्वरार्थ कर्म है और ईश्वरार्थ कर्म ही अनासक्त कर्म है। जो बन्धन का बाधक तथा मोक्ष का साधक है। भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि मुझको निष्काम कर्म अतिप्रिय है। कर्मयोग का अर्थ अपने कर्म को पूरी एकाग्रता के साथ पूर्ण रूप से करना है और कोई भी कार्य पूर्णता के साथ तभी सम्भव है जब उसके कुछ पाने की इच्छा न हो उसका क्या परिणाम होगा इस तरफ मन न ले जाकर पूरी एकाग्रता के साथ किया जाए जब इंसान अपना कर्म बिना आसक्त हुए करता है तो मनुष्य की सारी शक्तियां केन्द्रीभूत होती है और एक आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न करती है और इस आध्यात्मिक ऊर्जा से जों ज्ञान प्राप्त होता है उससे मनुष्य सुख दुःख से पार होकर परम आनंद को भोगता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 02, (April-June 2025)

निष्कर्ष

उपरोक्त कथनों शास्त्रोक्त वचनों एवं सामयिक परिस्थितियों से इस बात की पुष्टि होती है की कर्मयोग के मार्ग का अनुशीलन करना वर्तमान समय की पुकार है। सम्पूर्ण वि"व आज शान्ति–ि"ाक्षा पर शोध कर रहा है वि"व में शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। परन्तु फिर भी समाज निरन्तर पतन की तरफ बढता जा रहा है। समाज की युवा शक्ति ज्ञान–विहीन, मूल्य–विहीन तथा लक्ष्य–विहीन होकर भटक रही है। स्वार्थ ने मानव को अंधा बना दिया है। आधुनिक युग की विसंगतियों से मनुष्य मात्र के पुर्नउत्थान का मार्ग कर्मयोग साधना द्वारा ही सम्भव है। कर्मयोग की सार्वभौमिकता और प्रासंगिकता निःसंदेह ही मनुष्य जीवन के हर क्षेत्र में विद्यमान है। श्रीमद्भगवद् गीता में विभिन्न साधना मार्गों का प्रतिपादन किया गया है। इनमें से कर्मयोग साधना मार्ग अत्यन्त उपयोगी है। वर्तमान समय में कर्मयोग साधना की उपयोगिता निःसन्देह ही महत्वपूर्ण है।

REFERENCE

https://www.ijcrt.org/papers/IJPUB1304112.pdf

https://patnawomenscollege.in/upload/Explore%20Vol.%20IX/t14.pdf

https://egyankosh.ac.123456789/91822/1/Unit-12.pdf

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–2, सांख्ययोग, श्लोक–38, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर,, पृ0–37। www.gitapress.org

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–2, सांख्ययोग, श्लोक–47, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ0–40। www.gitapress.org

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–3, कर्मयोग, श्लोक–27, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ0–56। www.gitapress.org

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–3, कर्मयोग, श्लोक–5, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ0–50। www.gitapress.org

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–18, मोक्षसंन्यासयोग, श्लोक–2, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ0–218। www.gitapress.org

श्रीमद्भगवद् गीता, अध्याय–2, सांख्ययोग, श्लोक–48, लेखक–अज्ञातकृत, प्रकाशक–गीता प्रैस, गोरखपुर, पृ0–40। www.gitapress.org